

---

# Vakratunda Stuti Shivakrita

---

## शिवकृता वक्रतुण्डस्तुतिः

---

### Document Information

---

Text title : Vakratunda Stuti Shivakrita

File name : vakratuNDastutiHshivakRRitA.itx

Category : ganesha, mudgalapurANa, stuti

Location : doc\_ganesha

Proofread by : Yash Khasbage, Preeti Bhandare

Description/comments : mudgalapurANaM prathamaH khaNDaH | adhyAyaH 51 | 1.51 21-32||

Latest update : June 4, 2024

Send corrections to : sanskrit at cheerful dot c om

---

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

**Please help to maintain respect for volunteer spirit.**

---

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

---

June 5, 2024

*sanskritdocuments.org*

---

शिवकृता वक्रतुण्डस्तुतिः



॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

शिव उवाच ।

नमस्ते वक्रतुण्डाय सर्वसिद्धिप्रदाय च ।

निराकाराय देवाय साकाराय नमो नमः ॥ २१ ॥

नमः सर्वप्रबोधाय नमः सर्वप्रियङ्कर ।

गणानां पतये तुभ्यं गणेशाय नमो नमः ॥ २२ ॥

ब्रह्मणो सृष्टिकर्त्रे ते पालकाय च विष्णवे ।

संहर्त्रे ते हरायैव गुणेशाय नमो नमः ॥ २३ ॥

ब्रह्माकाराय वै तुभ्यं ब्रह्मभूताय ते नमः ।

नमः प्रपञ्चरूपाय प्रपञ्चानां प्रचालक ॥ २४ ॥

अनन्तगुणधाराय ह्यनन्तविभवाय ते ।

अनन्तोदररूपाय हेरम्बाय नमो नमः ॥ २५ ॥

कारणानां परायैव कारणाय नमो नमः ।

अकारणाय वै तुभ्यं सिंहवाहाय ते नमः ॥ २६ ॥

अहं जीवसमानश्च सञ्जातो नात्र संशयः ।

अविमुक्तं विमुक्तं मे जातं देव दयानिधे ॥ २७ ॥

अतस्त्वां शरणं यातो निर्विघ्नं कुरु मां प्रभो ।

देहि काशीं गणाध्यक्ष अविमुक्ततया च मे ॥ २८ ॥

त्वया पुरा वरो दत्तः स्मरणेन त्वदग्रतः ।

स्थास्यामि पुत्रभावेन तं पालय गजानन ॥ २९ ॥

इत्युक्त्वा पादयोस्तस्य प्रणनाम महेश्वरः ।

तमुत्थाप्य गणाध्यक्ष उवाच प्रहसन्निव ॥ ३० ॥

(फलश्रुतिः)

वक्रतुण्ड उवाच ।

त्वया कृतमिदं स्तोत्रं सर्वसिद्धिकरं भवेत् ।

पठते शृण्वते चैव भुक्तिमुक्तिप्रदं शिव ॥ ३१ ॥

अन्यद्यत्प्रार्थितं सर्वं करिष्यामि सदाशिव ।

अविमुक्तं प्रदास्यामि सार्थकं ते च साम्प्रतम् ॥ ३२ ॥


इति शिवकृता वक्रतुण्डस्तुतिः सम्पूर्णा ॥


- ॥ मुद्गलपुराणं प्रथमः खण्डः । अध्यायः ५१ । १.५१ २१-३२ ॥

- .. mudgalapurANaM prathamaH khaNDaH . adhyAyaH 51 . 1.51 21-32..

Proofread by Yash Khasbage, Preeti Bhandare

---

——  
*Vakratunda Stuti Shivakrita*  
pdf was typeset on June 5, 2024

——  
Please send corrections to [sanskrit@cheerful.com](mailto:sanskrit@cheerful.com)

